215hi09

9

बैंकिंग सेवाएं

किसी कस्बे अथवा शहर की गलियों में घूमते हुए आपने केनरा बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, यूनाइटेड कॉमर्शियल बैंक आदि के साइनबोर्ड भवनों पर लगे हुए देखे होंगे। इन नामों से क्या पता चलता है? क्या आपने कभी इनके बारे में जानने की कोशिश की है? यदि आप किसी ऐसी इमारत में जाएंगे, जिनमें ये बैंक खुले हुए हैं, तो आपको किसी व्यापारिक कार्यालय की तरह का माहौल दिखाई देगा। आप देखेंगे कि कर्मचारी काउंटरों के पीछे अपने सामने खड़े व्यक्तियों से बातचीत कर रहे हैं। आप यह भी देखेंगे कि कुछ व्यक्ति एक काउंटर पर रूपया जमा कर रहे हैं, जबकि कुछ अन्य व्यक्ति किसी दूसरे काउंटर पर से रूपया प्राप्त कर रहे हैं। काउंटरों के पीछे उस कार्यालय में मेज भी रखी हुई हैं, जिन पर ऑफीसर बैठे हुए हैं। उस कार्यालय के एक ओर आपको एक चैम्बर (पार्टीशन लगा छोटा कमरा) भी दिखेगा, जहां प्रबंधक बैठा होगा, जिसकी मेज पर कुछ कागज भी रखे हुए होंगे। यह एक बैंक का कार्यालय है। आइए, हम बैंकों तथा उनके कार्यकलापों के विषय में अधिक जानकारी प्राप्त करें।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- 'बैंक' की परिभाषा बता सकेंगे;
- 'बैकिंग' की भूमिका का वर्णन कर सकेंगे;
- विभिन्न प्रकार के बैंकों की पहचान कर सकेंगे; और
- एक व्यापारिक बैंक के कार्यों का वर्णन कर सकेंगे।

9.1 बैंक का अर्थ

सरकार द्वारा प्राधिकृत कोई संगठन जो अपने ग्राहकों से जमा स्वीकार करता है, ब्याज का भुगतान करता है, चैकों का समाशोधन करता है, ऋण देता है, वित्तीय लेनदेनों हेतु मध्यस्थ का कार्य करता है तथा अन्य वित्तीय सेवाएं उपलब्ध करता है, उसे बैंक कहते हैं।

आप जानते है कि खाना, कपड़ा, बच्चों की शिक्षा, मकान आदि के दिन प्रतिदिन के खर्चों को पूरा करने के लिए लोग धन अर्जित करते हैं। उन्हें भावी खर्चों, जैसे विवाह, बच्चों की उच्च शिक्षा, मकान बनवाने तथा अन्य सामाजिक व्ययों को पूरा करने के लिए भी धन की

आवश्यकता रहती है। ये बड़े खर्चे हैं, और यदि वर्तमान आय से कुछ धन बचाकर रखा जाए तो इनको पूरा किया जा सकता है। बुढ़ापे और बीमारी के लिए भी कुछ पैसे बचाकर रखना आवश्यक होता है, क्योंकि ऐसे समय में लोगों को आजीविका कमाना संभव नहीं हो पाता है।

विभिन्न बैंकों के चिन्ह

प्राचीन काल में भी लोगों को बचत करने की आवश्यकता प्रतीत होती थी। वे अपने घरों में ही पैसे को जमा (होर्ड) करके रखते थे। इस प्रथा के कारण आवश्यकता पड़ने पर बचत से उनकी जरूरतें पूरी हो जाती थी। किन्तु इस प्रथा में चोरी, डकैती तथा अन्य किस्म की घटनाओं से होने वाली हानि का जोखिम अधिक होता था। इसलिए, लोगों को ऐसे स्थान की आवश्यकता हुई, जहां वे अपनी बचत सुरक्षा सहित जमा कर सकें, इस आश्वासन के साथ ही वे अपनी जमा राशि से आवश्यकता पड़ने पर पैसे निकाल सकते हैं। यह सेवा बैंक देता है। व्यावसायिक तथा अन्य कार्यों के लिए उचित ब्याज दर पर बैंकों से ऋण भी मिलता है। बैंक एक वित्तीय संथान है जो जमा स्वीकार करता है तथा धन का उपयोग ऋण देने में करता है।

बैंक एक वैध संस्थान है जो कि जमा धन स्वीकार करता है तथा माँग पर निकासी करता है। यह व्यक्तियों तथा व्यवसायिक संस्थाओं से धन का लेन-देन करता है।

बैंक और भी कई उपयोगी सेवाएं प्रदान करता है- जैसे हुंडियों (बिल) की राशि की वसूली करना, विदेशी बिलों का भुगतान करना, जेवरात तथा अन्य मूल्यवान वस्तुओं का सुरक्षित रखना, व्यावसायिक संगठन की साख क्षमता को प्रमाणित करना आदि।

बैंक कई अन्य सेवाएँ प्रदान करता है जैसे- बिल का भुगतान, जेवरात को सुरक्षित रखना, व्यवसाय की साख का ध्यान रखना आदि।

बैंक साधारण जनता और व्यावसायिक संगठनों से जमा राशि स्वीकार करता है। कोई भी व्यक्ति, जो भविष्य के लिए बचत करना चाहता है, वह बैंक में अपनी बचत जमा कर सकता है। व्यापारी माल की बिक्री से राशि अर्जित करता है, जिसमें से उसे खर्चों को चुकाना पड़ता है। वह बिक्री से प्राप्त राशि बैंक में आसानी से जमा कर सकता है ओर इस जमा रशि का उपयोग समय-समय पर होने वाले खर्चों को पूरा करने के लिए कर सकता है। बैंक इन जमाकर्त्ताओं को दो आश्वासन देता है :

(क) जमा राशि का सुरक्षा का, और

(ख) आवश्यकता पड़ने पर इस जमाराशि को वापस देने का।

जमा राशि पर बैंक ब्याज देता है, जो मूल राशि में जोड़ दिया जाता है। जमाकर्त्ता के लिए यह एक बड़ा अभिप्रेरण होता है। यह जनता के बीच बचत करने की आदत को बढ़ावा देता

है। बैंक जमा राशि के आधार पर किसानों, व्यापारियों तथा उपक्रमियों को उत्पादन कार्यों के लिए ऋण तथा अग्रिम भुगतान भी देता है। इस प्रकार बैंक देश के आर्थिक विकास में तथा सामान्य रूप में जनता की भलाई के लिए योगदान करते हैं। बैंक ऋणों पर ब्याज भी लेते हैं। यह ब्याज की दर जमा राशि पर दी जाने वाली ब्याज की दर से सामान्यत: अधिक होती है। व्यावसायिक संगठन तथा जन साधारण के लिए दी जाने वाली विभिन्न सेवाओं के लिए बैंक फीस भी लेता है। ऋणों से प्राप्त ब्याज की रकम, जो जमा राशि पर दिए जाने वाले ब्याज से अधिक होती है, तथा अन्य विभिन्न सेवाओं से प्राप्त फीस बैंक की आय के प्रमुख साधन होते हैं, जिनसे वे अपने प्रशासनिक व्ययों को चुकाते हैं।

बैंकों द्वारा किए जाने वाले कार्य 'बैंकिंग कार्य' कहलाते हैं। बैंकिंग कार्यों में जमा स्वीकार करना और ऋण देना अथवा द्रव्य का विनियोजन शामिल है। द्रव्य उपलब्ध करा कर तथा कुछ विशेष सेवाएं प्रदान कर, जो माल तथा सेवाओं का विनिमय में सहायक होती हैं, यह व्यापारिक कार्यकलापों को सरल बनाता है। इस प्रकार 'बैंकिंग' व्यवसाय की एक महत्वपूर्ण सहायक सेवा है। न केवल यह माल के उत्पादन तथा सेवाओं के लिए धन प्रदान करता है, बल्कि क्रेताओं तथा विक्रेताओं के बीच इनके विनिमय को भी सुविधाजनक बनाता है।

आप शायद जानते होंगे कि बैंकिंग से संबंधित कुछ कानून भी हैं, जो हमारे देश में बैंकिंग कार्यकलापों का नियमन करते हैं। बैंकों में राशि जमा करना तथा बैंकों से ऋण लेना वैधानिक व्यवहार है। बैंकों पर भी सरकार का नियंत्रण रहता है तथा कही हद तक बैंक जनता के विश्वास पर निर्भर करते हैं। जनता के विश्वास के बिना वे जीवित नहीं रह सकते।

9.2 बैंकों तथा साहूकारों (मनीलैंडर्स) में अंतर

आप यह सोच रहे होंगे कि बैंक भी साहूकार की ही भांति होते हैं, जो ऋण लेने वालों को धन उपलब्ध कराते हैं तथा ऋण की रकम पर ब्याज लेते हैं। किन्तु ऐसा नहीं है। एक बैंक साहूकार से बहुत भिन्न होता है। एक बैंक दो प्रमुख कार्य करता है- प्रथम, यह जमा स्वीकार करता है, दूसरा इसके आधार पर वह ऋण देता है। जबकि साहूकार अपने निजी धन से ऋण प्रदान करता है तथा प्राय: अन्य व्यक्तियों से जमा धन स्वीकार नहीं करता। निम्न तालिका के द्वारा आप बैंकों तथा साहूकारों के बीच अंतर स्पष्ट कर पाएंगे :

आधार	बैंक	साहूकार
1. अस्तित्व	बैंक व्यवस्थित संस्थान होते हैं।	साहूकार व्यक्ति होते है।
2. कार्यकलाप	बैंकिंग क्रियाकलापों में शामिल हैं- जमा धन स्वीकार करना तथा ऋण देना।	प्राय: जमा धन को स्वीकार करना साहूकार के क्रियाकलापों में नहीं होता।
3. ग्राहक	बैंक सामान्यत: जन साधारण की आवश्कताओं को तथा विशेषकर व्यापारिक समुदाय की आवश्यकताओं को पूरा करता है।	साहूकार किसानों तथा गरीब लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करता है।

4.	जमानत	बैंक जमानत के रूप में मूर्त तथा व्यक्तिगत जमानत मांगते हैं।	साहूकार प्राय: उधार लेने वालों को जेवरात अथवा भूमि गिरवी रखकर ऋण देते हैं।
5.	ऋण वसूली की प्रक्रिया	ऋण वसूली की प्रक्रिया लचीली होती है।	ऋण वसूली की प्रक्रिया सख्त तथा दृढ़ होती है।
6.	ब्याज की दर	भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा ऋणों पर ब्याज की दर तय की जाती है।	ब्याज की दर साहूकार ही तय करता है तथा प्राय: बहुत ऊंची होती है।

बैंकिंग की भूमिका

व्यवसाय तथा व्यक्तियों की निजी आवश्यकताओं के लिए बैंक धन उपलब्ध कराता है। वह राष्ट्र की अर्थव्यवस्था में एक अहम भूमिका निभाता है। आइए हम बैंकिंग की भूमिका के विषय में जानकारी प्राप्त करें।

- यह जनता के बीच बचत की आदत को प्रोत्साहित करता है और इस प्रकार उत्पादन कार्यों के लिए धन उपलब्ध कराता है।
- जिन व्यक्तियों के पास अतिरिक्त धन है और जिन लोगों को विभिन्न व्यापारिक कार्यों के लिए धन की आवश्यकता होती है, उनके बीच ये मध्यस्थ का कार्य करता है।
- चैक द्वारा धन की प्राप्ति और भुगतान के माध्यम से यह व्यावसायिक व्यवहारों को सुविधाजनक बनाता है।
- व्यवसायियों को यह अल्प अवधि तथा दीर्घ अवधि के ऋण तथा अग्रिम भुगतान प्रदान करता है।
- आयात-निर्यात व्यवहारों को भी सरल बनाता है।
- किसानों, लघु उद्योगों और स्वयं रोजगार करने वाले व्यक्तियों तथा बड़े औद्योगिक घरानों को भी यह साख प्रदान कर राष्ट्रीय विकास में सहायक होता है जिससे देश का संतुलित आर्थिक विकास होता है।
- उपभोग की टिकाऊ वस्तुओं, मकान, मोटर गाड़ियों आदि के क्रय करने के लिए ऋण प्रदान कर यह जनसाधारण के रहन-सहन के स्तर को ऊंचा उठाने में मदद करता है।

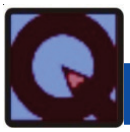

पाठगत प्रश्न 9.1

उपयुक्त शब्दों द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

i. एक बैंक जनता से जमा धन स्वीकार करता है और उन व्यक्तियों को _____ देता है, जो विभिन्न उद्देश्यों को पूरा करना चाहता है।

ii. अतिरिक्त धन रखने वाले व्यक्तियों और ऋण लेने वाले व्यक्तियों के बीच बैंक _____ का कार्य करता है।

iii. बैंक व्यापारिक कार्यों को सुविधाजनक बनाता है और इसे व्यापार का एक महत्वपूर्ण _____ माना जाता है।

iv. मुद्रा के स्थान पर _____ द्वारा बैंक भुगतानों को सरल बनाती है।

v. _____ अपनी निजी सम्पत्ति से ऋण देता है तथा सामान्यत: अन्य व्यक्तियों से जमा धन स्वीकार नहीं करता है।

9.3 बैंकों के प्रकार

हमारे देश में विभिन्न प्रकार के बैंक कार्य करते हैं, जो कृषि, व्यवसाय, पेशे आदि में लगे विभिन्न वर्गों के लोगों की वित्तीय आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। कार्यों के आधार पर भारत के बैंकिंग संस्थानों को निम्नलिखित प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है :

बैंकों के प्रकार

- केन्द्रीय बैंक (भारतीय रिजर्व बैंक)
- विकास बैंक
- सहकारी बैंक
- विशिष्ट बैंक (एक्जिम बैंक सिडबी, नाबार्ड)
- वाणिज्यक बैंक
  - (i) सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक
  - (ii) निजी क्षेत्र के बैंक
  - (iii) विदेशी बैंक
- सहकारी बैंक
  - (i) प्राथमिक सहकारी समितियां
  - (ii) राज्य-सहकारी बैंक
  - (iii) केन्द्रीय सहकारी बैंक

आइए, अब इन बैंकों के विषय में विस्तार से जानकारी प्राप्त करें।

क) केन्द्रीय बैंक (सेन्ट्रल बैंक)

देश की बैंकिंग प्रणाली के नियमन एवं उसे निर्देशन प्रदान करने वाले बैंक, केन्द्रीय बैंक कहलाते हैं। इस प्रकार के बैंक सामान्य जनता के साथ व्यवहार नहीं करते हैं। ये प्रमुखत: सरकारी बैंकर के रूप मे कार्य करते हैं। ये सभी बैंकों के जमा खातों का रिकार्ड रखते हैं और आवश्यकता पड़ने पर इन बैंकों को धन प्रदान करते हैं। केन्द्रीय बैंक अन्य बैंकों को निर्देशन प्रदान करता है तथा जब कभी उनकी कोई समस्या होती है, तो उसका समाधान भी निकालता है। अत: इसे बैंकर्स बैंक भी कहते हैं। भारतीय रिजर्व बैंक हमारे देश का केन्द्रीय बैंक है।

केन्द्रीय बैंक सरकारी आय और खर्च का, जो विभिन्न मदों में होते हैं, रिकार्ड भी रखता है। यह सरकार को मौद्रिक एवं साख नीतियों पर परामर्श देता है तथा बैंक जमा राशि और दिए

जाने वाले ऋण की ब्याज दरें भी निर्धारित करता है। इसके अतिरिक्त केंद्रीय बैंक का एक और महत्वपूर्ण कार्य है, पत्र-मुद्रा (करेंसी नोटस) का निर्गमन, देश में उनके चलन के नियमन के लिए विभिन्न विधियों का प्रयोग करता है। केन्द्रीय बैंक के अतिरिक्त अन्य कोई बैंक देश में मुद्रा निर्गमन का कार्य नहीं कर सकता है।

ख) वाणिज्यिक बैंक (कमर्शियल बैंक)

वाणिज्यिक बैंक एक ऐसा बैंकिंग संस्थान है, जो जनता से जमा-धन स्वीकार करता है तथा अपने ग्राहकों को अल्प अवधि के ऋण एवं अग्रिम प्रदान करता है। अल्प अवधि के ऋण प्रदान करने के साथ वाणिज्यिक बैंक, व्यावसायिक उपक्रमों को मध्यम-अवधि तथा दीर्घ-अवधि के ऋण भी प्रदान करते हैं। आजकल कुछ वाणिज्यिक बैंक व्यक्तियों को दीर्घकालिक गृह-ऋण भी देने लगे हैं। वाणिज्यिक बैंको के और भी बहुत से कार्य है, जिनकी चर्चा इस पाठ में बाद में की गई है।

वाणिज्यिक बैंकों के प्रकार : वाणिज्यिक बैंकों के तीन प्रकार हैं - सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक; निजी क्षेत्र के बैंक; और विदेशी बैंक।

i) **सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक :** ये ऐसे बैंक हैं, जिनमें अधिकांश साझा (स्टेक) भारत सरकार अथवा भारतीय रिजर्व बैंक का होता है। सार्वजनिक बैंक के उदाहरण हैं- स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, कारपोरेशन बैंक, बैंक ऑफ बड़ौदा, देना बैंक आदि।

ii) **निजी क्षेत्र के बैंक :** निजी क्षेत्र के बैंकों में अंश पूंजी का अधिकांश भाग निजी व्यक्तियों द्वारा अभिदत्त (Subscribe) किया जाता है। ये बैंक सीमित दायित्व वाली कम्पनियों के रूप में पंजीकृत होते हैं। उदाहरण के लिए - 'बैंक ऑफ राजस्थान लि.', 'डेवलेपमेंट क्रेडिट बैंक लि.', 'लार्ड कृष्णा बैंक लि.', 'भारत ओवरसीज बैंक लि.' आदि।

iii) **विदेशी बैंक :** ये बैंक पंजीकृत होते हैं और इनका मुख्यालय विदेश में होता है, किन्तु हमारे देश में इनकी शाखाएं कार्य करती हैं। हमारे देश में कार्यरत ऐसे कुछ बैंकों के नाम है : 'हांगकांग बैंक तथा शंघाई बैंकिंग कारपोरेश (HSBC)' 'सिटी बैंक', 'अमरीकन एक्सप्रेस बैंक', 'स्टैंडर्ड एंड चार्टर्ड बैंक', 'ग्रिंडले बैंक' आदि। 1991 में वित्तीय क्षेत्र के उपरान्त हमारे देश में कार्यरत विदेशी बैंकों की संख्या में वृद्धि हुई है।

ग) विकास बैंक

मशीनों तथा उपकरणों का क्रय करने, आधुनिकतम तकनीक का प्रयोग करने अथवा विस्तार और आधुनिकीकरण के लिए व्यवसाय में प्राय: मध्यम से दीर्घ अवधि तक के लिए पूँजी की

आवश्यकता होती है। इस प्रकार की वित्तीय सहायता विकास बैंक प्रदान करते हैं। वे विकास के लिए अन्य उपायों को भी अपनाते हैं जैसे कम्पनियों द्वारा निर्गमित अंशो तथा ऋणपत्रों में अंशदान करना, भारतीय औद्योगिक वित्तीय निगम (IFCI) और राज्य वित्तीय निगम (SBCs) भारत में विकास बैंक के उदाहरण हैं।

घ) सहकारी बैंक

सहकारी बैंक एक ऐसी वित्तीय इकाई है जो अपने सदस्यों से संबंधित है जो अपने बैंक के स्वामी होने के साथ-साथ उसके ग्राहक भी हैं। सहकारी बैंक सामान्यत: उन व्यक्तियों द्वारा स्थापित किए जाते है जो एक ही क्षेत्र में रहते हैं अथवा एक ही पेशेवर वर्ग से संबंधि त है अथवा समान हित रखते हैं। सहकारी बैंक सामान्यत: अपने सदस्यों को बैंकिंग तथा वित्तीय सेवाओं की एक बड़ी श्रृंखला उपलब्ध कराते हैं।

जो लोग अपने आपसी हितों को संयुक्त रूप से पूरा करना चाहते हैं वे प्राय: सहकारी समिति कानून के अंतर्गत एक सहकारी का गठन कर लेते हैं। जब एक सहकारी समिति बैंकिंग व्यवसाय करने लगती है तो उसे सहकारी बैंक कहते हैं। ऐसी समिति को व्यवसाय शुरू करने से पहले भारतीय रिजर्व बैंक से एक लाइसेंस लेना होता है। किसी भी सहकारी बैंक को समिति के रूप में कार्य करने के लिए जिले अथवा राज्य के सहकारी समिति पंजीयक (रजिस्ट्रार) की पूर्ण निगरानी में कार्य करना होता है। बैंकिंग व्यवसाय करने के लिए समिति को भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा बनाए तथा निर्गमित किए जाने वाले नियमों तथा निदेर्शों का अनुपालन करना होता है।

सहकारी बैंको के प्रकार

हमारे देश में तीन प्रकार के सहकारी बैंक कार्यरत हैं। ये हैं, प्राथमिक साख समितियां, राज्य सहकारी बैंक तथा केन्द्रीय सहकारी बैंक। ये बैंक तीन स्तरों पर गठित होते हैं- ग्राम अथवा नगर स्तर पर, जिला स्तर पर तथा राज्य स्तर पर।

i) **प्राथमिक साख समितियां :** ये समितियां ग्राम अथवा नगर के स्तर पर गठित की जाती है। इनके सदस्य ऋण लेने वाले तथा गैर-ऋण लेने वाले, दोनों ही प्रकार के होते हैं, जो एक ही क्षेत्र में रहने वाले होते हैं। प्रत्येक समिति का कार्यकलाप वहीं तक ही सीमित रहता है, जिससे सदस्य एक दूसरे की जानकारी भी प्राप्त कर सकें तथा सभी सदस्यों के कार्यों की निगरानी करके धोखाधड़ी को रोक सकें।

ii) **केन्द्रीय सहकारी बैंक :** ये बैंक जिला स्तर पर कार्य करते हैं। उसी जिले में कार्यरत श्रमिक साख समितियां इन बैंकों की सदस्य होती हैं। ये बैंक अपने सदस्यों (अर्थात् प्राथमिक साख समितियां) को ऋण प्रदान करते हैं और प्राथमिक साख समितियों तथा राज्य सहकारी बैंकों के बीच एक कड़ी का कार्य करते हैं।

iii) **राज्य सहकारी बैंक :** ये शीर्ष (उच्चतम स्तर) सहकारी बैंक हैं जो देश के सभी राज्यों में स्थापित हैं। वे धन का संग्रह करते हैं तथा उसको सभी उचित विधियों द्वारा

विभिन्न क्षेत्रों में वितरित करने में सहायक होते हैं। राज्य सहकारी बैंक से धन केन्द्रीय सहकारी बैंकों तथा प्राथमिक सहकारी समितियों के माध्यम से ऋण लेने वालों तक पहुंचता है।

ङ) विशिष्ट बैंक

कुछ ऐसे बैंक भी हैं, जिनका कार्य विशिष्ट कार्य क्षेत्र में स्थापित किए जाने वाले व्यवसाय की समस्त आवश्यकताओं को पूरा करना हैं। एक्जिम बैंक, सिडबी और नाबार्ड ऐसे बैंकों के कुछ उदाहरण है। वे किसी विशिष्ट कार्य क्षेत्र में अपने को लगाते हैं और इस प्रकार विशिष्ट बैंक कहलाते हैं। आइए इन बैंकों के विषय में और अधिक जानकारी प्राप्त करें।

i) **भारत का आयात-निर्यात बैंक (एक्जिम बैंक) :** यदि आप अपने देश से विदेशों में निर्यात करने अथवा विदेशों से आयात करने के लिए कोई व्यवसाय स्थापित करना चाहते हैं तो आयात-निर्यात बैंक आपको आवश्यक जानकारी तथा सहायता प्रदान कर सकता है। यह बैंक निर्यातकों तथा आयतकों को ऋण देता है तथा अंतर्राष्ट्रीय बाजारों के विषयों में सूचना प्रदान करता है। यह निर्यात अथवा आयात के अवसरों, इनमें निहित जोखिमों तथा प्रतियोगिता आदि संबंधी जानकारी भी देता है।

ii) **भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (सिडबी) :** यदि आप एक व्यवसाय अथवा उद्योग की लघु लकाई स्थापित करना चाहते हैं तो सिडबी आसान शर्तों पर ऋण दे सकता है। लघु औद्योगिक इकाइयों का आधुनिकीकरण करने, नवीन तकनीक का प्रयोग करने तथा विपणन संबंधी कार्यों के लिए भी यह वित्तीय सहायता प्रदान करता है। सिडबी का उद्देश्य लघु उद्योगों का प्रसार करना, उनकी वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा करना तथा उनका विकास करना है।

iii) **कृषि एवं ग्रामीण विकास के लिए राष्ट्रीयकृत बैंक (नाबार्ड) :** कृषि तथा ग्रामीण क्षेत्रों को वित्तीय सहायता देने वाला यह एक केन्द्रीय अथवा शीर्ष संस्थान है। यदि कोई व्यक्ति कृषि कार्यों अथवा अन्य कार्यों जैसे हथकरघा द्वारा बुनाई, मत्सय पालन आदि में लगा हुआ है, तो नाबार्ड उसे अल्प अवधि तथा दीर्घ अवधि दोनों प्रकार की साख प्रदान कर सकता है। यह वित्तीय सहायता विशिष्ट रूप से सहकारी साख कृषि, लघु उद्योगों, कुटीर एवं ग्रामीण उद्योगों, हस्त शिल्प तथा संबंधित आर्थिक कार्यों के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में प्रदान करता है।

पाठगत प्रश्न 9.2

निम्नलिखित कथनों में बैंकों के प्रकार को पहचानिए :

i. कम अंशदान होने की स्थिति में एक कंपनी के अंशों तथा ऋणपत्रें में अंशदान करने वाला बैंक।

ii. विदेशों में उत्पाद का निर्यात करने के लिए सहायता एवं जानकारी प्रदान करने वाला बैंक।
iii. व्यक्तियों के समूह द्वारा आपसी हितों को पूरा करने के लिए गठित बैंक।
iv. बैंक, जो करेंसी नोटों का निर्गमन करता है।
v. एक वाणिज्यिक बैंक, जिसमें सरकार का अधिक साझा होता है।

9.4 वाणिज्यिक बैंकों के कार्य

वाणिज्यिक बैंकों के कार्यों को मुख्य रूप से दो वर्गों में बाँटा जा सकता है :
i. प्राथमिक कार्य, और
ii. द्वितीयक कार्य

आइए, इनके बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त करें।

I. प्राथमिक कार्य

यह मुख्य कार्य हैं जो प्रत्येक बैंक को अनिवार्य रूप से करने पड़ते हैं अथवा हम कह सकते हैं कि जो संगठन इन कार्यों को करते हैं उन्हें बैंक कहते हैं।

एक वाणिज्यिक बैंक के प्राथमिक कार्यों में शामिल हैं :
i. जमा राशि स्वीकार करना, और
ii. ऋण तथा अग्रिम प्रदान करना।

i) **जमा राशि स्वीकार करना :** एक वाणिज्यिक बैंक का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य है, जनता से जमा राशि एकत्रित करना। जिन लोगों की आय तथा बचत अधिक है उनके लिए इन धन को बैंक में जमा करना आसान होता है। जमा की प्रकृति के अनुसार जमा की गई राशि पर ब्याज भी मिलता है। इस प्रकार बैंक के पास जमा राशि अर्जित ब्याज की रकम के साथ बढ़ती जाती है। ब्याज की दर ऊंची होने पर, जनता को बैंक में अधिक राशि जमा करने की प्रेरणा मिलती है। बैंक के पास जमा राशि सुरक्षित भी रहती है।

ii) **ऋण तथा अग्रिम प्रदान करना :** एक वाणिज्यिक बैंक का दूसरा महत्वपूर्ण कार्य है ऋण देना तथा अग्रिम प्रदान करना। ये ऋण तथा अग्रिम जनता तथा व्यवसाय संगठन को दिए जाते हैं, जिनकी ब्याज की दर, विभिन्न जमा राशि खातों पर दी जाने वाली ब्याज की दर से ऊंची होती है। ऋण तथा अग्रिम पर ली जाने वाली ब्याज की दर, ऋण के उद्देश्य तथा अवधि और ऋण भुगतान की विधि पर निर्भर करती है, अत: यह भिन्न-भिन्न होती है।

अ) **ऋण :** ऋण एक निश्चित अवधि के लिए दिया जाता है। सामान्यत: व्यापारिक बैंक अल्प अवधीय ऋण ही देते हैं। किन्तु अवधि ऋण (Term Loan) अर्थात् एक वर्ष से अधिक के लिए भी ऋण दिए जा सकते हैं। ऋणी को ऋण की सम्पूर्ण रकम एक मुश्त में भी दी जा सकती है और किश्तों में भी। ऋण साधारणतया कुछ परिसम्पत्तियों की

जमानत के आधार पर ही दिए जाते है। सामान्यत: ऋण का भुगतान किश्तों में होता है। किन्तु यह एक मुश्त रकम में भी भुगतान किया जा सकता है।

ब) **अग्रिम :** अग्रिम एक साख-सुविधा है, जो बैंक अपने ग्राहक को प्रदान करते हैं। यह सुविधा ऋण से इस अर्थ में भिन्न होती है कि ऋण लंबी अवधि के लिए दिए जा सकते हैं, जबकि अग्रिम अल्प अवधीय होते हैं। फिर, अग्रिम देने का उद्देश्य होता है - व्यवसाय की दिन-प्रतिदिन की आवश्यकताओं को पूरा करना। अग्रिम पर लिया जाने वाला ब्याज विभिन्न बैंकों में भिन्न-भिन्न होता है। ब्याज, ली गई राशि पर लगाया जाता है, स्वीकृत राशि पर नहीं।

अग्रिम के प्रकार : नकद साख, अधिविकर्ष तथा बिलों के भुनाने के माध्यम से बैंक अल्प अवधि की वित्तीय सहायता प्रदान करता है।

(क) **नकद साख (कैश क्रेडिट) :** यह एक सुविधा है, जिसमें बैंक ग्राहक को एक निर्धारित राशि निकालने की स्वीकृति देता है। यह निर्धारित राशि ग्राहक के खाते में जमा कर दी जाती है। ग्राहक इस राशि को आवश्यकता के अनुसार खाते से निकाल सकता है। निकली गई वास्तविक राशि पर ब्याज लगाया जाता है। ग्राहक के साथ तय हुई शर्तों व निबंधन के अनुसार नकद साख प्रदान की जाती है।

(ख) **अधिविकर्ष :** अधिविकर्ष भी बैंक द्वारा प्रदान की जाने वाली साख सुविधा है। एक ग्राहक को, जिसका बैंक में चालू खाता होता है, खाते में जमा राशि से अधिक रकम निकालने का अधिकार मिल जाता है। यह एक थोड़े समय की सुविधा होती है। अधिविकर्ष की सुविधा में एक निर्धारित राशि-सीमा तय कर दी जाती है, जो परि सम्पत्ति की जमानत पर अथवा व्यक्तिगत जमानत पर अथवा दोनों ही पर प्रदान की जाती है।

(ग) **बिल भुनाना :** बैंक अल्प अवधीय वित्तीय सुविधा बिलों के भुनाने के माध्यम से भी प्रदान करता है। अर्थात् बिल के परिपक्व होने से पूर्व ही बिल की राशि का भुगतान कर देता है। इस राशि से वह निश्चित दर से बट्टा काट लेता है। पार्टी को बिल भुगतान तिथि तक राशि के लिए रूकना नहीं पड़ता है। जब कभी कोई बिल देय तिथि पर अनादरित हो जाता है, तो बैंक ग्राहक से बिल की रकम वसूल कर सकता है।

II. द्वितीयक कार्य

जमा राशि स्वीकार करने तथा ऋण प्रदान करने, के प्राथमिक कार्यों के अलावा बैंक बहुत से अन्य कार्य भी करता है, जिन्हें द्वितीयक कार्य कहा जाता है। ये कार्य निम्नलिखित हैं :

i. साख पत्र, तथा ट्रेवलर्स चैक आदि निर्गमित करना।
ii. जेवरात, महत्वपूर्ण दस्तावेज तथा प्रतिभूतियों को सेफ डिपाजिट खाने अथवा लॉकर्स के माध्यम से सुरक्षा प्रदान करना।
iii. ग्राहकों को विदेशी मुद्रा की सुविधा देना।
iv. एक खाते से दूसरे खाते में तथा बैंक की एक शाखा से दूसरी शाखा को चैक, पे-आर्डर, डिमांड-ड्राफ्ट के माध्यम द्वारा रूपया हस्तांतरण करना।
v. किसी मशीन, मोटरगाड़ी या वस्तुओं के उधार क्रय पर अपने ग्राहकों की ओर से गारंटी प्रदान करता है।

पाठगत प्रश्न 9.3

निम्नलिखित में से सही और गलत कथन छांटिए तथा सही के सामन 'सही' तथा गलत के सामने 'गलत' अक्षर लिखिए।

i. ऋण तथा अग्रिम भुगतान दोनों बैंकों द्वारा अपने ग्राहकों को दीर्घ अवधि के लिए प्रदान किए जाते हैं।
ii. बैंक हमारे जेवर तथा महत्वपूर्ण दस्तावेज अपने पास सुरक्षित रखते हैं।
iii. बैंक विद्यार्थियों के अध्ययन के लिए उचित ब्याज दर पर ऋण देते हैं।
iv. बैंकों द्वारा बिलों को मुफ्त भुनाया जाता है।
v. अधिविकर्ष के माध्यम से एक ग्राहक अपने खाते में जमा राशि से अधिक राशि निकाल सकता है।

9.5 केन्द्रीय बैंक

भारतीय रिजर्व बैंक की स्थापना 1 अप्रैल 1935 को पहले से ही स्थापित भारतीय रिजर्व बैंक 1934 में संशोधित करके की गई थी। भारतीय रिजर्व बैंक का केन्द्रीय कार्यालय प्रारम्भ में कलकत्ता में स्थापित किया गया। परन्तु बाद में 1937 में इसे बम्बई स्थानान्तरित कर दिया गया। केन्द्रीय कार्यालय वह कार्यालय है जहां नीतियों बनाई जाती है और गर्वनर बैठते हैं। यद्यपि पहले यह प्राइवेट अधिग्रहण में था। परन्तु राष्ट्रीयकृत होने पर 1949 में भारत सरकार ने इसे अपने अधिकार में ले लिया था। इसका मुख्य कार्य बैंकों को दिशा निर्देश जारी करना, समय-समय पर स्थानीय व सहकारिता बैंकों को सहायता करना तथा केन्द्रीय बोर्ड द्वारा जारी आदेशों का पालन करना है।

9.6 बैंक जमा खाता

आप यह पढ़ चुके हैं कि बैंकों के मुख्य कार्य जन साधारण से जमा राशि स्वीकार करके उसे व्यवसायिओं तथा अन्य जिन्हें ऋण की आवश्यकता है, को उधार देना है। वास्तव में जो धन बैंकों में जमा किया जाता है वह अधिकतर व्यक्तियों का बचाया गया धन होता है। जैसा आप जानते हैं कि यदि कोई धन कमाता है तथा जिनकी नियमित आमदनी है वह न केवल इसे दिन प्रतिदिन के व्ययों में खर्च करता है वरन् वह अपनी भविष्य की आवश्यकताओं के

लिए इसका थोड़ा भाग बचाने का प्रयत्न करता है। धन, भविष्य में विभिन्न मदों जैसे बीमार होने की स्थिति में दवाईयों के लिए, शादी के व्ययों के लिए अथवा बच्चों की पढ़ाई के लिए अथवा धार्मिक उत्सवों इत्यादि के लिए, बचाया जाता है। बचाये गये धन को घर में रखा जा सकता है। परन्तु घर में रखने से क्या यह सुरक्षित रहेगा? इसकी चोरी हो सकती है। इसके अतिरिक्त बचाया धन घर में किसी आमदनी के बगैर बेकार पड़ा रहेगा। इसीलिए व्यक्ति अपनी बचत को ऐसे स्थान पर रखते हैं जहां वह सुरक्षित रहे तथा उससे कुछ कमाई कर सके। बैंक ऐसे स्थान हैं जहां धन एक बार जमा करने से सुरक्षित रहता है तथा उसे ब्याज भी मिलता है। इस पाठ में हम जमा खाते जो हम बैंकों में खोल सकते हैं के प्रकारों के विषय में पढ़ेंगे तथा चर्चा करेंगे कि एक बचत खाता कैसे खोला जाता है तथा परिचालित किया जाता है।

9.7 बैंक जमा खातों के प्रकार

बैंक जमा विभिन्न व्यक्तियों के लिए विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं। कुछ व्यक्ति नियमित रूप से नहीं बचा सकते हैं। वे बैंक में धन तभी जमा कराते हैं जब उनकी अतिरिक्त आमदनी होती है। तब जमा का उद्देश्य धन को भविष्य के लिए सुरक्षित रखना है। कुछ व्यक्ति बैंक में धन को लम्बे समय के लिए जमा करना चाहते हैं ताकि वे ब्याज कमा सकें अथवा अपनी बचत को ब्याज सहित फ्लेट खरीदने के लिए या वृद्धावस्था के हस्पताल के व्यय चुकाने के लिए संचित करते हैं। इन अंतरों को ध्यान में रखते हुए बैंक विभिन्न प्रकार की जमा खाते खोलने की सुविधा प्रदान करते है। जो लोगों के विभिन्न उद्देश्यों एवं सुविधाओं के अनुकूल होते हैं।

उद्देश्यों की पूर्ति के आधार पर बैंक जमा खातों को निम्न भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है :

i. बचत बैंक खाता
ii. चालू जमा खाता
iii. सावधी जमा खाता
iv. आवर्ती जमा खाता।

आइये उपरोक्त खातों की प्रकृति के विषय में संक्षिप्त रूप से जानें।

i) **बचत बैंक खाता :** यदि किसी व्यक्ति की आमदनी सीमित है तथा वह भविष्य की आवश्यकताओं के लिए धन बचाना चाहता है तो इस उद्देश्य के लिए बचत बैंक खाता सबसे अधिक उपयुक्त है। इस खाते को प्रारम्भिक न्युनतम जमा राशि (जो विभिन्न बैंकों में विभिन्न हैं) जमा करके खोला जा सकता है। इस खाते में धन किसी समय भी जमा कराया जा सकता है। इसमें से धन या तो रूपया निकालने वाले फार्म अथवा चैक जारी करके अथवा ए.टी.एम. कार्ड द्वारा निकाला जा सकता है। साधारणतया बैंक इस खाते से धन निकालने की संख्या पर प्रतिबंध लगाते है। ब्याज इस खाते में जमा की गई राशि के शेष पर दिया जाता है। बचत बैंक खाते पर ब्याज की दर विभिन्न बैंक में विभिन्न होती है तथा यह समय-समय पर बदलती रहती

है। इस खाते में बैंक द्वारा निर्धारित न्यूनतम शेष रखना पड़ता है।

ii) **चालू जमा खाता :** बड़े व्यवसायियों, कंपनी तथा स्कूल, कॉलेज तथा अस्पताल जैसी संस्थानों को भुगतान बैंक खाते के माध्यम से करना होता है। चूंकि बचत बैंक खाते से धन निकालने की संख्या पर प्रतिबंध होता है इसलिए यह खाता उनके लिए उपयुक्त नहीं है। इसीलिए एक ऐसे खाते की आवश्यकता है जिससे वे कितनी बार ही धन निकाल सकें। इनके लिए बैंक चालू खाता खोलते हैं। बचत बैंक खाते की तरह इस खाते में भी खाता खोलते समय एक निश्चित न्यूनतम राशि की आवश्यकता होती है। इस जमा खाते में बैंक शेष राशि पर कोई ब्याज नहीं देता है। अपितू खातेधारी को प्रतिवर्ष एक निश्चित राशि परिचालन व्यय के रूप में देनी होती है। खाता धारकों की सुविधा के लिए, बैंक जमा शेष से अधिक राशि निकालने की अनुमति देते हैं। इस सुविधा को अधिविकर्ष सुविधा कहते हैं। यह सुविधा कुछ विशिष्ट ग्राहकों को बैंकों से पहले ही करार करने पर निश्चित ''सीमा राशि'' के लिए दी जाती है।

iii) **सावधी जमा खाता :** (आवधिक खाता भी कहलाता है) बहुत बार व्यक्ति लम्बे समय के लिए धन बचाते हैं यदि धन को बचत बैंक खाते में जमा कराये जाये तो बैंक कम दर पर ब्याज देते हैं। इसीलिए धन को सावधि जमा खाते में जमा कराया जाता है।

इस प्रकार के जमा खाते में राशि एक निश्चित समय के लिए जमा कराई जाती है। यह अन्तराल 15 दिन से तीन वर्ष अथवा अधिक हो सकता है तथा इस दौरान राशि निकालने की अनुमति नहीं होती। हाँ जमाकर्ता की प्रार्थना पर वह परिपक्वता से पहले राशि प्राप्त कर सकता है। इस स्थिति में बैंक मिलने वाली ब्याज की दर से कम ब्याज देते हैं। सावधि जमा खाते के ब्याज की राशि को निश्चित समय अन्तराल में निकाला जा सकता है। अवधि की समाप्ति पर जमा राशि निकाली जा सकती है अथवा इसका निश्चित अवधि के लिए नवीनीकरण कराया जा सकता है। बैंक सावधि जमा की रसीद की जमानत पर ऋण देते हैं।

iv) **आवर्ती जमा खाता :** इस प्रकार का खाता उनके लिए उपयुक्त है जो नियमित रूप से बचत करते हैं तथा एक निश्चित समय के लिए राशि जमा करके अच्छी ब्याज कमाने की आशा करते हैं। इस खाते को खोलते समय किसी व्यक्ति को एक निश्चित राशि प्रत्येक माह एक निश्चित अवधि के लिए जमा करने का समझौता करना पड़ता है। अवधि के पूरा होने पर समस्त जमा की गई राशि कमाये गये ब्याज सहित देय होती है। जमा कर्ता को निश्चित अवधि के समाप्त होने से पहले खाता बंद करने की अनुमति है तथा वह उस समय तक की जमा की गई राशि तथा ब्याज की राशि प्राप्त कर सकता है। खाते को व्यक्तिगत अथवा संयुक्त रूप से अथवा अव्यस्क की स्थिति में अभिभावक द्वारा खोला जा सकता है। इस खाते में जमा की गई राशि पर बचत बैंक खाते से अधिक परन्तु सावधि खाते पर उसी अवधि के लिए दिये जाने वाले ब्याज से कम ब्याज मिलता है।

पाठगत प्रश्न 9.4

I. निम्न में से कौन से कथन सही है तथा कौन से गलत है :

i. बचत बैंक खाते में जमा की गई राशि वर्तमान तथा भविष्य की आवश्कताओं को पूरा करने के लिए प्रयोग की जाती है।

ii. एक सावधि जमा खाते में प्रत्येक माह एक निश्चित राशि जमा करनी पड़ती है।

iii. आवर्ती जमा खाते में जमा राशि पर ब्याज दर बचत बैंक खाते की अपेक्षा अधिक होती है।

iv. चालू जमा खाता केवल व्यवसायियों द्वारा खोला जा सकता है न कि शिक्षा संस्थानों द्वारा।

v. गृह निर्माण बचत जमा खाता आवर्ती जमा खाते का एक प्रकार है।

vi. सावधि जमा पर दिया जाने वाला ब्याज उस आवधि की लम्बाई पर निर्भर होता है जिसके लिए राशि जमा कराई गयी है।

vii. बचत बैंक खाते में से राशि को केवल खाताधारी ही निकाल सकता है।

viii. बैंक चालू जमा खाते के शेष पर ब्याज नहीं देते।

II. उपयुक्त शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

i. बचत बैंक खाते को _____ जमा राशि से खोला जा सकता है।

ii. एक सावधि जमा खाते में बचत बैंक खाते की अपेक्षा _____ ब्याज मिलता है।

iii. अधिविकर्ष की सुविधा _____ जमा खाता धारक को मिलती है।

iv. चालू खाते से धन _____ द्वारा निकाला जा सकता है।

v. आवर्ती जमा खाते के शेष पर सावधि जमा खाते की अपेक्षा _____ ब्याज मिलता है।

9.8 बचत बैंक खाता कैसे खोला जाता है

किसी वाणिज्यिक बैंक में बचत खाता खोलने के लिए आपको सर्वप्रथम यह तय करना होता है कि आप प्रारम्भ में कितनी धान राशि जमा करना चाहेंगे। अपने नजदीकी बैंक से पूछताछ कर सकते हैं तथा मालूम कर सकते हैं कि बचत बैंक जमा खाते को खोलने के लिए न्युनतम राशि क्या है। आपको उतनी या यदि आप चाहते हैं तो उससे अधिक राशि जमा करनी होगी। अन्य किसी बैंक (अथवा बैंक की किसी शाखा) में घुसने पर आपको एक पूछताछ खिड़की (अथवा एक खिड़की जिस पर 'मैं आपकी सहायता कर सकता हूं' का बोर्ड लगा है) दिखाई देगी जहां आप यह पूछताछ कर सकते हैं। जमा की न्यूनतम राशि जानने के पश्चात आपको बचत बैंक खाता खोलने के लिए आवेदन पत्र मांगना चाहिए। आपको इसके लिए कोई भुगतान नहीं करना पड़ता। तब आपको निम्न कदम उठाने चाहिए।

i) **आवेदन पत्र भरना :** आवेदन पत्र में दिये गये रिक्त स्थानों को आवश्यक निम्न सूचना से भरना :

i. आवेदक का नाम
ii. उसका पेशा
iii. आवासीय पता
iv. आवेदक के नमूने के हस्ताक्षर
v. आवेदक के परिचय देने वाले व्यक्ति का नाम, पता, खाता संख्या एवं हस्ताक्षर।

उपरोक्त सूचना के अलावा आपको एक वचन देना होगा कि बैंक के प्रचलित नियमों एवं शर्तों का पालन करेंगे। आवेदन पत्र के अंत में आपको अपने हस्ताक्षर करने होंगे। (कुछ बैंकों में आवेदनकर्ता को पासपोर्ट आकार के दो फोटो आवेदन पत्र के साथ लगाने होते हैं)।

ii) **परिचय :** प्रत्येक बैंक की आवश्यकता है कि एक ऐसा व्यक्ति आवेदक का परिचय दे जिसे बैंक जानता हो। यह सुविधाजनक है कि वह व्यक्ति परिचय दे जिसका खाता पहले से ही बैंक में हो। कुछ बैंक आवेदक का पासपोर्ट अथवा ड्राईविंग लाइसेंस की अनुप्रमाणित नकल स्वीकार कर लेते हैं। इस स्थिति में, व्यक्तिगत परिचय देना आवश्यक नहीं है। परिचय की आवश्यकता इसलिए होती है ताकि संदिग्ध व्यक्ति द्वारा खाता खोलने को रोका जा सके।

iii) **नमूने के हस्ताक्षर :** प्रार्थी को प्रार्थना फार्म पर अपने नमूने के हस्ताक्षर करने होते है। इसके लिए कार्ड पर भी उसे अपने नमूने के हस्ताक्षर करने होते हैं। इस कार्ड पर उसका नाम तथा खाता नम्बर लिखा जाता है। साथ ही उसका फोटो भी चिपकाया जाता है।

उपरोक्त कदमों को लेने के पश्चात तथा आवेदन पत्र में दिये गये सूचना से सम्बन्धित अधिकारी की संतुष्टि के बाद नकदी खिड़की पर जमा पर्ची भरकर धन राशि जमा की जाती है। इसके पश्चात एक खाता संख्या दी जाती है जिसे आपके आवेदन पत्र तथा नमूने हस्ताक्षर कार्ड पर लिख दिया जाता है। उसी समय आपको एक पास-बुक जिस में आप द्वारा जमा कराई गई प्रारम्भिक जमा राशि लिख दी जाती है। आगे जमा राशि तथा निकाली राशि भी इसमें लिखी जाती है तथा यह आपके पास रहती है। यदि आप अपनी जमा राशि में से कुछ राशि निकालना अथवा राशि का भुगतान चैक द्वारा करना चाहते हैं तो आपको प्रार्थना पर एक चैक बुक दे दी जाती है। चैक पत्र एक छपा पत्र है जिसमें आप बैंक को एक निश्चित राशि किसी व्यक्ति को भुगतान करने का आदेश कर सकते हैं।

9.9 बचत बैंक खाते का परिचालन

खाता खोलने के पश्चात आपको इस खाते के परिचालन के विषय में जानना चाहिए। दूसरे शब्दों में आपको खाते में अतिरिक्त राशि जमा करने तथा इस खाते से धन राशि निकालने की अपनाई जाने वाली प्रक्रिया मालूम होनी चाहिए।

i) खाते में धन राशि जमा करना

आप अपने खाते में किस प्रकार धन राशि जमा करेंगे? खाता खोलने समय प्रारम्भिक धन राशि जमा करने के लिए जमा पर्ची के प्रयोग को आप पहले से जानते हैं। यह एक छपा पत्र हैं जिसे आप बैंक से प्राप्त करते हैं।

प्रत्येक जमा पर्ची के दो भाग होते हैं जो छेदन द्वारा पर्णिकाओं में बटी होती है, दाहिने हाथ के भाग को पर्णिका (Foil) तथा बायें हाथ के भाग को प्रतिपार्णिका (Counter foil) कहते हैं। इस पर्ची को नकदी तथा चैक जमा करने पर भरा जाता है। नकदी तथा चैक जमा करने के लिए अलग-अलग जमा पर्चियां भरनी होती है।

मान लीजिए आपको अपने खाते में नकदी जमा करनी है तो आप को जमा पर्ची पर जमा की तिथि, अपना नाम, खाता संख्या तथा जमा राशि (शब्दों तथा अंकों दोनों में) लिखनी होगी। इसके अलावा जमा पर्ची पर निर्देशित स्थान पर कितने विभिन्न अंकित मूल्य के नोट (5, 10, 20, 50, 100 इत्यादि) जमा कराये जा रहे हैं एवं इन नोटों के प्रकार के सामने राशि लिखनी होती है। बैंक में नकदी प्राप्ति के लिए अलग खिड़की (Conter) होती है। आपको पर्ची पर हस्ताक्षर करके नकदी के साथ उस खिड़की पर देनी होती है। प्राप्तकर्ता जमा पर्ची की पर्णिका (सीधे हाथ वाली) को रख लेता है जबकि बायें हाथ वाले भाग (प्रतिपर्णिका) पर रबड़ की स्टाम्प लगाकर अपने हस्ताक्षर करके आपको दे देता है।

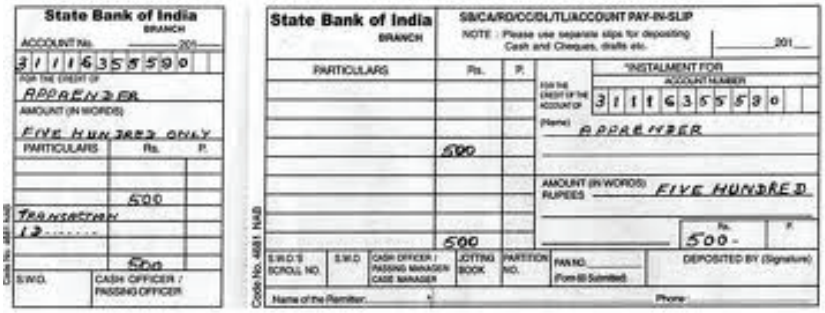

नकदी की बजाय, मान लीजिए, आपको चैक जमा करना है जिसे आपने अपने कार्यालय, जिसमें कार्यरत हैं, वेतन के भुगतान के रूप में प्राप्त किया है। आप दूसरे बैंक से रूपया लेने के बजाय आप इसे अपने बैंक खाते में जमा करना चाहेंगे। आपका बैंक चैक की राशि एकत्रित करेगा तथा आपके बचत बैंक खाते में जमा कर देगा।

चैक को जमा करने के लिए आपको दोबारा जमा पर्ची का प्रयोग करना होगा। जिसमें आपको जमा करने की तिथि, खाता संख्या, खाताधारी का नाम, चैक का क्रम संख्या तथा तिथि, जिस बैंक पर चैक लिखा गया उसका नाम तथा पता तथा चैक राशि दोनों अंकों व शब्दों में, आदि विवरण भरने होते हैं। पर्ची पर हस्ताक्षर करके, आपको चैक को पर्णिका के साथ लगाकर, चैक प्राप्ति खिड़की पर प्रस्तुत करना होगा। खिड़की पर बैठा व्यक्ति पर्णिका संग्लन चैक को साथ रख लेगा तथा प्रतिपर्णिका पर रबड़ स्टाम्प लगाकर तथा अपने हस्ताक्षर करके आपको वापिस कर देगा। कुछ बैंकों में खिड़की समीप एक बक्सा रखा होता है। जमाकर्ता को, 'रबड़ स्टाम्प' भी खिड़की पर उपलब्ध होती है। जमाकर्ता को रबड़ स्टाम्प को पर्णिका तथा

प्रतिपर्णिका पर लगानी होती है। इसके पश्चात् प्रतिपर्णिका को अलग करके चैक को पर्णिका सहित बॉक्स में डालना होता है।

ii) खाते से राशि निकालना

आप अपनी बचत को भविष्य के प्रयोग के लिए जमा करते हैं। धन की आवश्यकता किसी भी समय हो सकती है। इसीलिए आपको यह जानना चाहिए कि खाते से आप अपना रूपया कैसे वापिस ले सकते हैं। उपरोक्त अनुभाग में आप बचत बैंक खाते में धन राशि जमा करने की प्रक्रिया के विषय में पढ़ चुके हैं। आइये आपके खाते से धन राशि निकालने की प्रक्रिया के विषय में जाने। इनका प्रयोग कर रूपया निकाला जा सकता है।

a. रूपया निकालने वाले फार्म
b. चैक
c. ए.टी.एम. कार्ड

a) **रूपया निकालने वाले फार्म (आहरण पत्र) :** प्रत्येक बैंक में रूपया निकालने के लिए छपा फार्म होता है, जिसे आहरण पत्र कहते है। जिसे खाताधारी जमा खातों से रूपया निकालने के लिए प्रयोग कर सकता है। फार्म में रूपया निकालने की तिथि, खाता संख्या, निकालने वाली राशि (अंको तथा शब्दों में भरना होता है) तथा उस खाताधारी के हस्ताक्षर होते है। आपको इसे अपनी पास बुक सहित उस खिड़की पर देना होता है जहां से आपका खाता परिचालित हो रहा है। खिड़की पर संबंधित अधिकारी साधारणतया फार्म को खाते में शेष तथा रिकार्ड में नमूने के हस्ताक्षर से फार्म के हस्ताक्षर का मिलान करके भुगतान हेतु पास कर देता है। निकाली गई राशि को पास बुक में लिखा जाता है तथा खिड़की पर भुगतान कर दिया जाता है यदि राशि एक विशेष सीमा (कहिए ₹ 5000) के अंतर्गत है, अन्यथा एक टोकन जिसपर एक संख्या होती है दे दिया जाता है। इसे निकाली जाने वाली राशि प्राप्त करने के लिए नकदी भुगतान खिड़की पर प्रस्तुत किया जाता है।

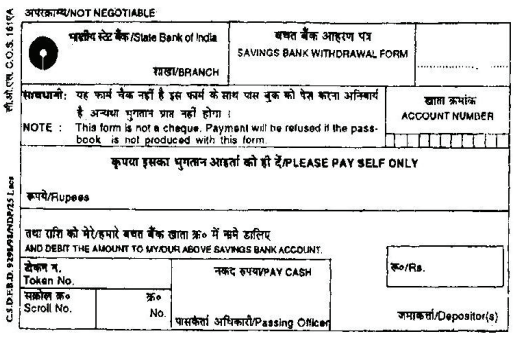

अपरक्राम्य/NOT NEGOTIABLE
भारतीय स्टेट बैंक/State Bank of India
शाखा/BRANCH
बचत बैंक आहरण पत्र
SAVINGS BANK WITHDRAWAL FORM
सावधानी: यह फार्म चैक नहीं है इस फार्म के साथ पास बुक को पेश करना अनिवार्य है अन्यथा भुगतान प्राप्त नहीं होगा।
NOTE : This form is not a cheque. Payment will be refused if the pass-book is not produced with this form.
खाता क्रमांक
ACCOUNT NUMBER
कृपया इसका भुगतान आहर्ता को ही दें/PLEASE PAY SELF ONLY
रूपये/Rupees
तथा राशि को मेरे/हमारे बचत बैंक खाता क्र० में नामे डालिए
AND DEBIT THE AMOUNT TO MY/OUR ABOVE SAVINGS BANK ACCOUNT.
टोकन नं.
Token No.
सक्रोल क्र०
Scroll No.
क्र०
No.
नकद रुपया/PAY CASH
पासकर्ता अधिकारी/Passing Officer
रू०/Rs.
जमाकर्ता/Depositor(s)
सी.ओ.एस. C.O.S. 1619A
C.S.D.F.B.D. 9298/98/NDP/25 Lacs

आहरण पत्र फार्म

b) **चैक :** खाताधारी के रूप में आप अपने बचत बैंक खाते से या तो राशि निकालने वाले फार्म को भरकर तथा हस्ताक्षर करके या चैक जारी करके रूपया निकाल सकते हैं।

अन्य पक्षों के भुगतान हेतु चैक जारी किये जा सकते हैं। इस प्रकार दूसरे पक्ष (व्यक्ति) को दिये गये चैक की राशि उसके द्वारा बैंक से भी निकाली जा सकती है अथवा दूसरे बैंक से धन एकत्रित करने हेतु चैक जमा किया जाता है।

चैक द्वारा रूपया निकालने की प्रक्रिया वही है जो रूपया निकालने वाले फार्म को भरकर तथा हस्ताक्षर करके की जाती है। जिसे ऊपर समझाया गया है। दोनों स्थितियों

टिप्पणी

में निकाली गई राशि को बैंक की पुस्तकों में अपेक्षित बचत खाते में लिखा जाता है। शेष जमा पर ब्याज की राशि भी बैंक द्वारा खोले गए अलग-अलग खातों में दर्शाई जाती है। इन्हें जब कभी खाताधारी बैंक में पासबुक प्रस्तुत करता है, तो पासबुक में लिखा जाता है।

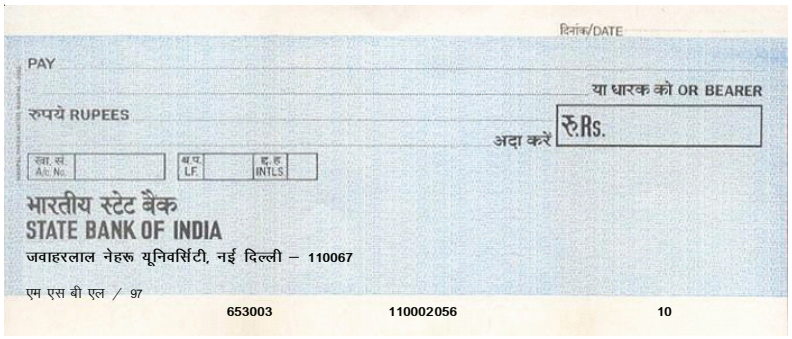

चैक का नमूना

c) **ए.टी.एम. कार्ड :** बैंक अपने जमा कर्त्ताओं को ए.टी.एम. कार्ड जारी करते हैं जिससे कि वह अपने खाते में से राशि सरलता से निकाल सकें। इस कार्ड का प्रयोग स्वचालित टैलर मशीन (ए.टी.एम.) के माध्य से बचत बैंक खाते एवं चालू खाते दोनों से रूपया निकालने के लिए किया जा सकता है। यह एक चुम्बकीय कार्ड होता है। इसके परिचालन के लिए एक गुप्त नम्बर का प्रयोग करना होता है। रूपया निकालने की यह सर्वाधिक सुविधाजनक पद्धति है।

- **टैलर कांउटर :** शीघ्र लेन देन के लिए बैंकों में टैलर पद्धति है। दो प्रकार के टैलर खिड़कियां होती है। (i) मानव संचालित (ii) स्वचालित टैलर कांउटर।

अधिकतर बैंक साधारणतया एक सीमा तक (जो ₹ 5,000 से ₹ 10,000 तक) व्यक्तियों द्वारा परिचालित टैलर कांउटर से बचत बैंक खाता से पैसा निकालने की छूट देते हैं। खिड़की पर प्रस्तुत चैक अथवा रूपया निकालने वाले फार्म को खाते के शेष, खाताधारी के हस्ताक्षर तथा अन्य विवरणों का खिड़की पर बैठा व्यक्ति जांच करता है तथा वही व्यक्ति भुगतान करता है।

टैलर प्रणाली

स्वचालित टैलर काउन्टर पर ए.टी.एम स्थापित कर दी जाती हैं जिनके माध्यम से 24सौं घंटे नकद लेन देन हो सकता है। आपके खाते के शेष जांच करने, नमूने के हस्ताक्षर से मिलान करने तथा नकद भुगतान देने के लिए किसी व्यक्ति की नियुक्ति की आवश्यकता नहीं है। आइए सीखें कि एक ए.टी.एम मशीन किस प्रकार कार्य करती है?

जब बैंक एक ए.टी.एम. लगाता है तो वह प्रत्येक खातेदार को एक चुम्बकीय कार्ड

और गुप्त कोड नम्बर देता है। इस कोड नम्बर को व्यक्तिगत पहचान (PIN) कहते हैं। जब भी किसी कार्डधारी को रूपया निकालना होता है अथवा जमा कराना होता है तो वह सबसे पहले अपनी पहचान कराता है। इसके लिए वह अपने PIN को बताता है। ए.टी.एम. के परिचालन के लिए यह आवश्यक है। कार्ड जैसे ही मशीन में डालेंगे तो यह आपसे आपका PIN पूछेगी। PIN की प्रविष्टि के लिए आप या तो की-बोर्ड का प्रयोग या फिर मशीन के पर्दे को छुएंगे।

एक बार आपकी पहचान हो जाए तो मशीन आपको पैसा निकालने अथवा जमा कराने के सम्बंध में दिशा निर्देश देगी। जमा कराने के लिए ए.टी.एम. केन्द्र से एक विशेष लिफाफा मिलेगा जिसमें आप राशि रख देंगे। जमा का बटन दबाने पर यह लिफाफा स्वमेव मशीन में चला जाएगा। बैंक अधिकारी ऐसे लिफाफों को नियमित अन्तराल पर निकाल लेते हैं तथा सम्बन्धित खातों के जमा में प्रविष्ठि कर देते हैं। इसी प्रकार से रूपया निकालने के लिए इसके बटन को दबाएंगे अथवा पर्दे को छूएंगे। तत्पश्चात जितनी राशि निकालनी है वह बताएंगे। पूरी राशि आपके लिए तुरन्त मशीन में से बाहर आ जाएगी।

पाठगत प्रश्न 9.5

I. निम्न में कौन से कथन सही हैं तथा कौन से गलत हैं :

i. बचत बैंक खाता खोलते समय जमा पर्ची का प्रयोग करना होता है।

ii. बचत बैंक खाते से चैक द्वारा रूपया निकालने के लिए खाताधारी रूपया निकालने वाले फार्म का प्रयोग नहीं कर सकता।

iii. एक बचत बैंक खाताधारी, बचत बैंक खाता खोलते समय, दूसरे व्यक्ति का परिचय नहीं दे सकता है।

iv. किसी खातेधारी को बैंक में जमा राशि तथा बैंक से निकाली राशि का एन्ट्री कराने के लिए बैंक पास-बुक प्रस्तुत करनी चाहिए।

v. बचत बैंक खाता खोलने के लिए आवेदन पत्र बैंक से बिना किसी भुगतान के उपलब्ध होता है।

vi. चैक द्वारा तीसरे पक्ष को भुगतान हेतु चैक पर पक्ष का नाम अवश्य लिखना होता है।

vii. चैक बुक केवल खाताधारी की प्रार्थना पर बैंक द्वारा दी जाती है।

viii. बचत बैंक खाता खोलने के तुरन्त पश्चात बैंक पास-बुक जारी कर देता है।

II. उपयुक्त शब्दों से रिक्त स्थान भरिए :

i. बैंक द्वारा जमा पर्ची की प्रति पर्णिका _____ को वापिस कर दी जाती है।

टिप्पणी

ii. जमा पर्ची के सीधे हाथ वाले भाग को _____ कहते हैं।

iii. जमा से पहले चैक को जमा पर्ची के _____ के साथ संलग्न करना होता है।

iv. चैक का भुगतान करने से पहले, खाताधारी के हस्ताक्षर _____ से मिलान करने होते हैं।

v. टेलर पद्धति खाताधारी द्वारा शीघ्र _____ में सहायक होती है।

vi. बचत बैंक खाते में राशि _____ खिड़की पर जमा कराई जा सकती है।

9.7 ई-बैंकिंग (इलैक्ट्रॉनिक बैंकिंग)

ई-बैंकिंग को नए तथा परंपरागत बैंकिंग उत्पादों तथा सेवाओं को इलैक्ट्रॉनिक माध्यमों से तथा संचार माध्यमों से सीधे ग्राहकों को समर्पित करने के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। ई-बैंकिंग में ऐसे तंत्र सम्मिलित हैं जो वित्तीय संस्थानों, ग्राहकों, व्यक्तियों अथवा व्यवसायों को सार्वजनिक तथा निजी नेटवर्क, इंटरनेट के माध्यम से उनके खातों से संबंधित लेन-देन करने अथवा वित्तीय उत्पादों तथा सेवाओं की जानकारी कराते है। सूचना तकनीक तथा संचार की अत्याधुनिक विधियों का विकास होने से बैंकिंग सेवाओं को भी अब कम्प्यूटरीकृत कर दिया गया है। अब बहुत से बैंक शाखाओं में आप देखेंगे कि बैंकिंग व्यवहारों का रिकार्ड कम्प्यूटर के द्वारा रखा जाता है। आपके खाते में जमा राशि की सूचना अब कम्प्यूटर से प्राप्त हो सकेगी। बहुत से बैंकों में आजकल कैशियर टैलर के स्थान स्वचालित टैलर मशीन (ए. टी.एम.) लगा दी गई है। कम्प्यूटर तथा संचार का अन्य इलेक्ट्रॉनिक मशीनों द्वारा बैंकिंग कार्यकलाप करना, इलैक्ट्रॉनिक बैंकिंग अथवा 'ई-बैंकिंग' कहलाता है। आइए, अब हम भारत में प्रयुक्त बैंकिंग का आधुनिक विधियों की जानकारी प्राप्त करें।

• स्वचलित टेलर मशीन (ऑटोमेटिक टैलर मशीन)

किसी बैंक शाखा अथवा अन्य स्थान पर लगाई मशीन जिससे ग्राहक मूल बैंकिंग क्रियाकलाप (खाते का शेष जानना, रूपया निकालना अथ्वा अंतरित करना) कर सकें चाहे बैंक बंद ही क्यों न हो, उसे स्वचालित टैलर मशीन कहते हैं। बैंकों ने संपूर्ण भारत में सुविधाजनक स्थानों पर अपनी स्वचालित टैलर मशीनें (ए.टी.एम.) लगा ली है। इनके उपयोग से ग्राहक किसी भी समय अपने खाते में राशि जमा कर सकता है अथवा उसमें से निकाल सकता है।

• डेबिट कार्ड

एक कार्ड, जो बैंक, ग्राहकों को इलैक्ट्रानिक माध्यम से तुरंत उनके खाते तक पहुंच उपलब्ध कराता है। बैंक अपने ग्राहकों को, जिनके बचत खाते अथवा चालू खाते, उनके यहां होते हैं, डेबिट कार्ड देने लगे हैं। ग्राहक इन कार्डो के द्वारा नकदी के स्थान पर विभिन्न वस्तु और सेवाएं खरीद सकते हैं। डेबिट कार्ड द्वारा चुकाई गई रकम ग्राहक के खाते से स्वत:

डेबिट कार्ड

ही डेबिट (घटा दी) कर दी जाती है।

- **क्रेडिट कार्ड**

एक वित्तीय कंपनी द्वारा जारी किया गया कार्ड जो धारक को सामान्यत: विक्रय स्थान पर ही उधार की सुविधा प्रदान करता है। क्रेडिट कार्ड पर ब्याज लगता है तथा ये सामान्यत: अल्पावधि वित्त हेतु उपयोग किए जाते हैं। साधारणत: क्रय के एक माह बाद से ब्याज प्रारंभ होता है तथा व्यक्तियों की ऋण धारण क्षमता के आधार पर उधार की सीमा पहले ही तय कर दी जाती है। बैंक, क्रेडिट कार्ड उन ग्राहकों को देता है जिनके खाते बैंक में होते हैं अथवा नहीं भी होते। ठीक डेबिट कार्ड की भांति क्रेडिट कार्ड सामान खरीदने के लिए प्रयोग किए जाते हैं। व्यक्ति को अपने साथ तब नकदी ले जाने की आवश्यकता नहीं रह जाती। क्रेडिट कार्ड धारक को बैंक एक निश्चित समय के भीतर क्रेडिट की गई रकम बैंक में जमा करने की अनुमति देता है। निर्धारित समय के भीतर कार्ड धारक द्वारा क्रेडिट की गई रकम जमा न कराने पर बैंक ब्याज लगा देता है। ब्याज की दर प्राय: बहुत ऊंची होती है।

क्रेडिट कार्ड

- **नेट बैंकिंग**

इंटरनेट इलैक्ट्रानिक माध्यम से विभिन्न बैंक खातों के मध्य वित्त के हस्तांतरण का सुरक्षित माध्यम उपलब्ध कराता है तथा साथ ही इंटरनेट पर बैंकिंग लेन-देन करने की सुविधा प्रदान करता है। सभी बैंकिंग क्रियाएं जो परंपरागत रूप से बैंक में जाकर संपन्न की जाती थी, आज इंटरनेट की पहुंच के कारण कम्प्यूटर के माध्यम से ही कर ली जाती है। क्रेडिट कार्ड लेन-देन, इंटरनेट बैंकिंग का ही रूप है। नेट-बैंकिंग के माध्यम से आप न केवल अपने खाते का शेष जान सकते हैं बल्कि आप एक स्थाई जमा खाता खोल सकते हैं, वित्त अंतरण कर सकते हैं, अपने बिजली, पानी अथवा मोबाईल फोन के बिलों का भुगतान कर सकते हैं तथा कई अन्य कार्य भी कर सकते हैं। आजकल, नेट बैंकिंग के माध्यम से आप न केवल अपने एक बैंक खाते को देख सकते है, बल्कि अन्य बैंक में अपने खाते को भी देख सकते हैं। अत: आप एक ही पर्दे पर अपने विभिन्न बैंक खातों को एक साथ देख सकते हैं। अत: जब बैंकिंग लेन-देन जैसे अंतरण, भुगतान तथा गृह ऋण हेतु आवेदन इंटरनैट के माध्यम से किए जाएं तो इसे नेट-बैंकिंग कहते हैं।

नेट बैंकिंग प्रणाली

नेट-बैंकिंग व्यक्तियों को घर बैठे ही इंटरनेट के माध्यम से बैंकिंग क्रियाकलाप संपन्न करना सुलभ कराती है। परंपरागत बैंकों द्वारा उपलब्ध कराई गई नेट-बैंकिंग ग्राहकों को सभी

दिन-प्रतिदिन के लेन-देन जैसे खाता स्थानांतरण, शेष जानना, बिल भुगतान, भुगतान रोकने का अनुरोध तथा ऋण एवं क्रेडिट कार्ड हेतु आवेदन पत्र भी ऑन लाइन जमा कराने की सुविधा उपलब्ध कराती है। खाते की जानकारी किसी भी समय, दिन अथवा रात तथा कहीं से भी प्राप्त की जा सकती है।

कम्प्यूटर तथा इंटरनेट का व्यापक रूप से प्रयोग होने से बैंक अब इंटरनेट पर भी लेन-देन करने की सुविधा दे रहे हैं। जिस ग्राहक का खाता बैंक में होता है, वह बैंक की बेवसाइट पर लॉग कर सकता है तथा खाते की स्थिति की जानकारी प्राप्त कर सकता है। वह अपने बिलों का भुगतान कर सकता है, मुद्रा हस्तांतरण, स्थायी जमा तथा बिलों की राशि की वसूली आदि के लिए आदेश दे सकता है।

- **फोन बैंकिंग**

फोन बैंकिंग एक ऐसी व्यवस्था है जो ग्राहकों की अपने खाते तथा विभिन्न बैंकिंग सेवाओं तक पहुंच टेलीफोन के माध्यम से 24 घंटे उपलबध कराती है। यह एक ऐसी सुविधा है जो ग्राहकों को बैंकिंग सेवाओं का उपयोग, जैसे मौखिक भुगतान निर्देश, खाता संचलन, ऋण लेना आदि, व्यक्तिगत रूप से बैंक में जाने के बजाय टेलीफोन के माध्यम से सुलभ कराती है। बैंक का ग्राहक, जिसका खाता बैंक में हो, फोन बैंकिंग सुविधा के अंतर्गत फोन के माध्यम से स्थायी जमा, मुद्रा हस्तांतरण, डिमांड ड्राफ्ट, बिलों का संग्रहण तथा भुगतान आदि जैसे बैंकिंग व्यवहार कर सकता है।

फोन बैंकिंग

अब मोबाइल फोन का चलन बहुत बढ़ गया है, अत: मोबाइल फोन द्वारा भी फोन बैंकिंग संभव हो गई है। फोन बैंकिंग द्वारा संभव सभी कार्यों के अलावा, मोबाइल फोन द्वारा ग्राहक बैंक को संदेश दे सकता है और बैंक से संदेश प्राप्त भी कर सकता है।

पाठगत प्रश्न 9.6

I. कॉलम अ में दिए गए कथनों का कॉलम ब में दिए गए कथनों से मिलान कीजिए:

	कॉलम अ	कॉलम ब
i.	बैंकिंग सुविधा, जो हमारे द्वारा मुद्रा लेकर न चलने पर भी हमारे बैंक खाते से भुगतान करने के लिए सहायक होती है।	क) ऑटोमेटेड टैलर मशीन (ए.टी.एम.)
ii.	बैंकिंग सुविधा, जो हमको 24 घंटे राशि जमा कराने अथवा निकालने का अधिकार प्रदान करती है।	ख) मोबाइल बैंकिंग
iii.	इंटरनेट पर बैंकिंग व्यवहार करने	ग) क्रेडिट कार्ड

iv. हम मोबाइल फोन पर इस सुविधा के द्वारा अपने खाते की शेष रकम की सूचना प्राप्त कर सकते हैं। — घ) डेबिट कार्ड

v. बैंकिंग से क्रेडिट लेकर क्रय की हुई वस्तुओं का भुगतान करने की सुविधा — ङ) नेट बैंकिंग

II. बहुविकल्पीय प्रश्न

i. निम्नलिखित में से कौन सा कार्य सैन्ट्रल बैंक का कार्य नहीं है :
क) देश की बैंक प्रणाली का मार्ग दर्शन करना तथा उसे लागू करना।
ख) सरकारी बैंक की तरह से कार्य करता है।
ग) जनसाधारण से व्यवहार करना।
घ) अन्य बैंकों के जमा खातों का रख-रखाव करता है।

ii. निम्न में से कौन-सा वाणिज्यिक बैंक नहीं है :
क) भारतीय स्टेट बैंक ख) रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया
ग) आई.सी.आई.सी.आई. बैंक घ) पंजाब नेशनल बैंक

iii. निम्न में से कामर्शियल बैंक द्वारा दिया गया अग्रिम नहीं है :
क) कैश क्रेडिट ख) ओवर ड्राफ्ट
ग) व्यापारिक सूचनाएं एकत्र करना व उन्हें देना।
घ) बिलों पर छूट देना।

iv. फिक्स डिपोजिट एकाउंट सुविधा निम्न द्वारा उठाई जाती है :
क) व्यापारी ख) वेतन भोगी द्वारा
ग) लम्बे समय के लिये धन की बचत करने वाले द्वारा
घ) मासिक रूप में ब्याज पाने वाले द्वारा

v. निम्न में से कौन प्रपत्र बैंक से धन निकालने के लिए मान्य नहीं है :
क) चैक ख) निकासी पत्र
ग) व्यक्तिगत पहचान पत्र घ) ए.टी.एम. कार्ड

आपने क्या सीखा

- बैंक एक ऐसा संस्थान है जो जनता से जमा राशि स्वीकार करता है और उन व्यक्तियों को, जिनको इसकी आवश्यकता होती है, मुद्रा उधार देता है।
- बैंक व्यापार की एक महत्वपूर्ण सहायक सेवा है।
- बैंक बचत करने को बढ़ावा देता है तथा जमाकर्ताओं और ऋण लेने वालों के बीच एक मध्यस्थ का कार्य करता है।
- यह उधार व्यवहारों में सहायक होता है, निर्यात, आयात को सुविधाजनक बनाता है, राष्ट्रीय विकास में सहायक होता है और व्यक्तियों के रहन-सहन का स्तर ऊंचा उठाता है।

टिप्पणी

- **बैंकों के प्रकार**
  - → केन्द्रीय बैंक, भारत में रिजर्व बैंक, सरकारी बैंक का कार्य करता है तथा देश में कैरेंसी नोट निर्गमित करता है। यह बैंकरों का बैंक भी होता है।
  - → वाणिज्यिक बैंक, अल्प अवधीय तथा मध्यम अवधीय ऋण प्रदान करते हैं और इन पर ब्याज लेते हैं। ये तीन प्रकार के होते हैं : सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक, निजी क्षेत्र के बैंक तथा विदेशी बैंक।
  - → विकास बैंक व्यवसाय के लिए मध्यम तथा दीर्घ अवधीय ऋण देता है।
  - → सहकारी बैंक सदस्यों के आपसी हितों को पूरा करने के लिए गठित किए जाते हैं। भारत में प्राथमिक सहकारी साख समितियां (ग्राम्य स्तर पर), केन्द्रीय सहकारी बैंक (जिला स्तर पर) तथा राज्य सहकारी बैंक (राज्य स्तर पर) स्थापित है।
  - → एक्जिम बैंक निर्यातकों तथा आयातकों का पथप्रदर्शन करता है तथा उन्हें सहायता प्रदान करता है।
  - → नाबार्ड कृषि संबंधी तथा अन्य ग्रामीण कार्यकलापों के लिए वित्तीय सहायता प्राप्त करने में सहायक होता है।

- **वाणिज्यिक बैंकों के कार्य**
  - → **प्राथमिक कार्य :** जमाराशि स्वीकार करना, ऋण, नकद साख अधिविकर्ष और बिलों को भुनाने की सुविधा प्रदान करता है।
  - → **द्वितीयक कार्य :** साख पत्र देना, मूल्यवान वस्तुओं को सुरक्षित रखना, उपभोक्ता को वित्त प्रदान करना, शिक्षा के लिए ऋण देना।

- बैंक जमा विभिन्न व्यक्तियों के लिए विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति करते है। इन अंतरों को ध्यान में रखते हुए बैंक व्यक्तियों द्वारा उनकी सुविधा तथा उद्देश्यों की उपयुक्तता के लिए विभिन्न प्रकार के खाते खोलने की सुविधा प्रदान करते हैं। जो निम्न है :
  - → बचत बैंक खाता
  - → चालू जमा खाता
  - → सावधि जमा खाता
  - → आवर्ती जमा खाता

- आवर्ती खाते विभिन्न प्रकार के होते हैं, जैसे : गृह सुरक्षित खाता, संचित एवं बीमारी जमा खाता, गृह निर्माण जमा खाता इत्यादि।

- एक वाणिज्यिक बैंक में बचत खाता खोलने के लिए निम्न कदम उठाए जाते हैं: आवेदन पत्र भरना, सही परिचय, नमूना हस्ताक्षर।

- **ई-बैंकिंग :** सूचना तकनीकी तथा संचार के विकास के साथ बैंकिंग कार्य, क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड तथा ए.टी.एम. आदि इलैक्ट्रॉनिक माध्यम से निष्पादित किए जाते हैं।

पाठांत प्रश्न

1. 'बैंक' की परिभाषा दीजिए।
2. 'बैंकिंग' का क्या अर्थ है ?
3. निजी क्षेत्र के वाणिज्यिक बैंक तथा भारत में कार्यरत विदेशी बैंक, प्रत्येक के दो उदाहरण दीजिए।
4. एक बैंक के ग्राहक को क्रेडिट कार्ड द्वारा क्या सुविधा प्रदान की जाती है?
5. नकद साख का क्या अर्थ है ?
6. 'विकास बैंक' क्या कार्य करता है ?
7. बैंकिंग की भूमिका का 100 शब्दों में वर्णन कीजिए।
8. केन्द्रीय बैंक का क्या अर्थ है ?
9. (i) एक्जिम बैंक (ii) नाबार्ड, क्या कार्य निष्पादित करते हैं?
10. एक वाणिज्यिक बैंक के कोई चार द्वितीयक कार्य बताइए।
11. एक वाणिज्यिक बैंक के प्राथमिक कार्यों का वर्णन कीजिए।
12. प्रत्येक का उदाहरण देते हुए विभिन्न प्रकार के वाणिज्यिक बैंकों का वर्णन कीजिए।
13. (i) अस्तित्व (ii) सुरक्षा (iii) कार्यकलाप (iv) ग्राहक के आधार पर बैंक एवं साहूकार में अन्तर कीजिए।
14. वाणिज्यिक बैंकों द्वारा निष्पादित कार्यों का वर्णन कीजिए।
15. बैंकिंग क्षेत्र में हुए आधुनिक विकास का वर्णन कीजिए। ग्राहकों को दी जाने वाली आधुनिक सुविधाओं का उदाहरण भी दीजिए।
16. सहकारी बैंक का क्या अर्थ है ? भारत में सहकारी बैंकों के प्रकारों का भी वर्णन कीजिए।
17. किसी बैंक में बचत बैंक खाता खोलने की प्रक्रिया का वर्णन कीजिए ?
18. बचत बैंक खाते में नकदी जमा करने की प्रक्रिया बताइय।
19. बचत बैंक खाते में चैक जमा करने की क्या प्रक्रिया अपनाई जाती है ?
20. बचत बैंक खाता परिचालन के लिए रूपया निकालने वाले फार्म के प्रयोग का वर्णन कीजिए ?
21. बचत बैंक खाता खोलते समय आपको आवेदन पत्र में क्या विवरण देने होते हैं?
22. बताइए कि आप अपने बचत बैंक खाते से रोकड़ कैसे निकालेंगे ?
23. बचत बैंक खाते में रोकड़ अथवा चैक जमा करने में पे-इन-स्लिप के उपयोग का विवेचन कीजिए।
24. पे-इन-स्लिप क्या है? इसकी उपयोगिता बताइए।
25. क्या आप अपने बचत बैंक खाते के शेष से अधिक राशि निकाल सकते हैं ? अपने उत्तर के समर्थन में कारण दीजिए।
26. ए.टी.एम. क्या है ? यह बैंक के ग्राहकों की किस प्रकार सहायता करता है ?
27. एक बचत बैंक खाता खोलते समय, बैंक के जानने वाले व्यक्ति से परिचय कराना क्यों आवश्यक होता है ?

28. बचत बैंक खाते से धन निकालने के विभिन्न तरीके कौन-कौन से हैं ?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

9.1 (i) ऋण (ii) मध्यस्थ (iii) सहायक (iv) चैक (v) साहूकार

9.2 (i) निजी बैंक (ii) एक्जिम बैंक (iii) सहकारी बैंक
(v) केन्द्रीय बैंक (vi) सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक

9.3 (i) गलत (ii) सही (iii) सही (iv) गलत (v) सही

9.4 **I.** (i) सत्य (ii) असत्य (iii) सत्य (iv) असत्य
(v) सत्य (vi) सत्य (vii) असत्य (viii) सत्य

II. (i) न्यूनतम (ii) अधिक (iii) चालू (iv) चैक (v) कम

9.5 **I.** (i) सत्य (ii) असत्य (iii) असत्य (iv) सत्य
(v) सत्य (vi) सत्य (vii) सत्य (viii) सत्य

II. (i) खाताधारी/जमाकर्ता (ii) पर्णिका (iii) पर्णिका
(iv) नमूने के हस्ताक्षर (v) रूपया निकालना (vi) नकद प्राप्ति

9.6 **I.** (i) घ (ii) क (iii) ङ (iv) ख (iv) ग

II. (i) ग (ii) ख (iii) ग (iv) ख (v) ग

आपके लिए क्रियाकलाप

- अपने इलाके में कार्यरत बैंकों की एक सूची बनाइए तथा उन्हें कार्यों के आधार पर वर्गीकृत कीजिए।
- किसी नजदीकी बैंक की शाखा पर जाइए तथा नकदी जमा करने वाली पर्ची एकत्रित कीजिए। इनको काल्पनिक अंकों की सहायता से भरिए।
  i. विभिन्न जमा खातों को खोलने के लिए आवश्यक न्यूनतम राशि तथा
  ii. बचत बैंक आवर्ती तथा सावधि खातों में देय ब्याज दर, के विषय में सूचना एकत्रित कीजिए।